SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रामराज्य की परिकल्पना भारतीय सामाजिक ताने–बाने के परिप्रेक्ष्य में

सुमन यादव, Ph.D., राजनीति विज्ञान विभाग
शहीद भगत सिंह इवनिंग कॉलेज, शेख सराय, फेज–2, नई दिल्ली, दिल्ली, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुमन यादव, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/09/2023
Revised on : -----
Accepted on : 07/10/2023
Plagiarism : 00% on 29/09/2023

शोध सार

श्री राम के रामराज्य एवं तुलसीदास द्वारा रामराज्य का किया गया उल्लेख तथा महात्मा गांधी द्वारा रामराज्य जोकि उन्होंने 1929 में 'यंग इंडिया' में लिखा था के साथ–साथ डॉक्टर भीमराव अंबेडकर द्वारा रामराज्य पर टिप्पणी तथा साम्राज्य/ रामराज्य की व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह का अध्ययन इस लेख का मुख्य आकर्षण है। समय–समय पर विभिन्न न्यायालयों में रामराज्य को लेकर दायर जनहित याचिकाए व उनका भारतवर्ष में प्रयोग एवं प्रभाव भी आंशिक रूप से इस लेख में डाला गया है। निश्चित तौर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की रामराज्य की परिकल्पना एवं रामराज्य के बारे में विचार तथा नीतियां एवं परंपराओं के असम्भावी सार भी इस लेख का अंग है।

मुख्य शब्द

रामराज्य, जीवनयापन, परिप्रेक्ष्य, अनभिज्ञ, लोकतंत्र.

परिचय

भारत के संदर्भ में रामराज्य का तात्पर्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों और रामायण महाकाव्य में उल्लिखित "रामराज्य" की अवधारणा से प्रेरित शासन के रूप में एक आदर्श राज्य से है। "रामराज्य" शब्द अक्सर भगवान राम के शासनकाल से जुड़ा हुआ है, जिसे धार्मिक और न्यायपूर्ण शासन का प्रतीक माना जाता है। रामराज्य में, शासक की कल्पना एक निस्वार्थ, बुद्धिमान और दयालु राजा के रूप में की गई है जो धर्म (धार्मिकता) को कायम रखता है और सभी नागरिकों के कल्याण के लिए काम करता है। रामराज्य की अवधारणा अक्सर समाज के सभी वर्गों के बीच ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानता और सद्भाव जैसे सिद्धांतों को आत्मसात किये हुए है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत में कई राजनीतिक नेताओं और आंदोलनों ने एक आदर्श समाज के अपने दृष्टिकोण को

बढ़ावा देते हुए रामराज्य के विचार का उल्लेख किया है। हालाँकि रामराज्य की व्याख्याएँ सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण के आधार पर भिन्न हो सकती हैं।

भारत एक विविध और गतिशील राजनीतिक परिदृश्य के साथ एक लोकतांत्रिक गणराज्य भी है, जहां विभिन्न विचारधाराएं और दृष्टकोण सह–अस्तित्व में हैं, तथापि रामराज्य की स्थापना कुछ लोगों के लिए एक आकांक्षा बनी हुई है, लेकिन इसका व्यावहारिक कार्यान्वयन भारतीय जनता और उसके निर्वाचित प्रतिनिधियों के सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करता है।

राम राज्य की अवधारणा

रामराज्य, जिसे अक्सर "राम का शासन" या "धर्म का शासन" के रूप में वर्णित किया गया है तथा यह एक अवधारणा है जो भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं में गहराई से निहित है। यह मुख्य रूप से न्याय, सत्य, समानता और नैतिक मूल्यों के सिद्धांतों पर आधारित शासन की एक आदर्श शासन प्रणाली और न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था को स्थापित करता है। उत्तरकाण्ड में अयोध्या के राजा श्रीराम के शासन काल का वर्णन नैतिकता आधारित एवं न्यायपूर्ण शासन के रूप में किया गया है। रामराज्य की अवधारणा के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

नेतृत्व और शासन: रामराज्य एक आदर्श शासक या राजा के गुणों पर जोर देता है। भगवान राम को एक दयालु, बुद्धिमान और न्यायप्रिय नेता के रूप में दर्शाया गया है जो अपने लोगों के कल्याण को व्यक्तिगत हितों से ऊपर रखते हैं। उनका प्रशासन धर्म द्वारा निर्देशित है और कानून के शासन का पालन करता है।

समानता और न्याय: रामराज्य सभी नागरिकों के बीच उनकी जाति, पंथ या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना समानता को बढ़ावा देता है। न्याय निष्पक्षता से दिया जाता है और कानून का शासन कायम रहता है। रामराज्य में सभी का आदर और सम्मान किया जाता है।

नैतिकता और नैतिक मूल्य: भगवान राम के सत्य, ईमानदारी, करुणा, नैतिकता जैसे गुण रामराज्य के केंद्र में हैं। शासक और नागरिकों से इन गुणों के साथ जीवन जीने की अपेक्षा की जाती है।

समृद्धि और कल्याण: रामराज्य एक ऐसे राज्य की कल्पना करता है जहां लोगों के बीच समृद्धि, विकास और खुशी हो। जहां नागरिकों के समग्र कल्याण और भलाई पर जोर दिया जाता हो।

शांति और सद्भाव: रामराज्य विभिन्न धार्मिक और सामाजिक समूहों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव, शांति और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है। यह एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देता है जहॉ लोग एक–दूसरे की मान्यताओं और रीति–रिवाजों का सम्मान करते हुए सौहार्दपूर्ण ढंग से सह–अस्तित्व में रहते हैं।

पर्यावरण चेतना: भगवान राम को अक्सर प्रकृति और वन्य जीवन की रक्षा से जोड़ा जाता है। रामराज्य में पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी का भाव है।

यहॉ यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि रामराज्य की अवधारणा किसी विशिष्ट धार्मिक समूह तक ही सीमित नहीं है। इसे विभिन्न पृष्ठभूमियों और विचारधाराओं के लोगों ने सुशासन और सामाजिक सद्भाव के लिए एक महत्वाकांक्षी मॉडल के रूप में अपनाया है। आधुनिक समय में, रामराज्य नेताओं और नागरिकों के लिए समान रूप से प्रेरणा का विषय बना हुआ है, भारत में कई राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों ने एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की वकालत करने के लिए रामराज्य के सिद्धांतों का आह्वान किया है। हालाँकि, शासन और मानव स्वभाव की जटिलताओं को देखते हुए, इसका व्यावहारिक एहसास और व्याख्या एक बहस का विषय बना हुआ है।

उद्देश्य

हालांकि वर्तमान समय में राम राज्य की स्थापना एक अत्यंत ही काल्पनिक एवं अप्रासंगिक प्रतीत होता है तथापि यह कल्पना सहस्त्र वर्षों के पश्चात् भी इस देश के जनमानस में जीवित है। इस लेख का मुख्य उद्देश्य भारत की प्राचीन राज्यव्यवस्था एवं वर्तमान कार्यप्रणाली का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करना है। भारत की वर्तमान परिस्थितियों तथा परिदृश्य में राम राज्य की स्थापना की सार्थकता का आकलन करना लेख का उद्देश्य है।

गोस्वामी तुलसीदास का राम राज्य

"रामराज्य" हिंदू धर्म में एक अवधारणा है जो एक आदर्श और सामंजस्यपूर्ण राज्य को संदर्भित करती है, जोकि भगवान राम के शासनकाल से जुड़ा हुआ है। हिंदू परंपरा के सुप्रसिद्ध कवि और संत तुलसी दास ने महाकाव्य "रामचरितमानस" की रचना की, जो भगवान राम के जीवन और साहसिक कार्यों के बारे में बताता है। रामचरितमानस में तुलसी दास ने रामराज्य को धर्म, न्याय और समृद्धि का स्वर्ण युग बताया है। रामराज्य में शासक ज्ञान, करुणा और धर्म के पालन से शासन करता है। समाज की विशेषता शांति, सद्भाव और उसके सभी नागरिकों की भलाई है जहॉ लोग सदाचारी जीवन जीते हैं, और उनमें नैतिक मूल्यों, एक–दूसरे के प्रति सम्मान और समुदाय के कल्याण के प्रति निस्वार्थ सेवा की गहरी भावना होती है। वहाँ गरीबी, अन्याय और अपराध इत्यादि का कोई स्थान नही हैं, और भूमि समृद्धि और खुशहाली से भरपूर है। इस दोहे में तुलसीदासजी ने राम राज्य का सार प्रस्तुत किया हैः–

"बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहि भय सोक न रोग"

रामराज्य का विचार सुशासन, नैतिक नेतृत्व और एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के सिद्धांतों का प्रतीक है। इसे अक्सर एक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज की आकांक्षा के रूप में देखा जाता है, और यह भारतीय संस्कृति और राजनीति में एक प्रभावशाली अवधारणा के रुप में भी विद्यमान है। कई नेताओं और विचारकों ने आदर्श राज्य की अपनी परिकल्पना की चर्चा करते हुए रामराज्य का उल्लेख अपने–अपने शब्दो में किया है। हालॉकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि रामराज्य की व्याख्याएँ अलग–अलग हो सकती हैं, और कुछ लोग इसे शाब्दिक राजनीतिक खाका के बजाय एक प्रतीकात्मक या आध्यात्मिक आदर्श के रूप में भी देख सकते हैं किन्तु रामराज्य की स्थापना निश्चित रूप से आलोकिक एवं अद्भुत है जिसको संस्थापित किए जाने का हर संभव प्रयास वंदनीय है।

गांधी का रामराज्य

"रामराज्य" शब्द भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता एवं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से भी गहरा जुड़ाव रखता है। हालांकि "रामराज्य" संदर्भ भारतीय महाकाव्य, रामायण से आता है, जहां यह भगवान राम के शासनकाल को संदर्भित करता है, जो अपने न्यायपूर्ण और सदाचारी शासन के लिए जाने जाते हैं। गांधीजी के लिए, "रामराज्य" सत्य, अहिंसा, समानता और सादगी पर आधारित एक आदर्श समाज का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जहां लोग भेदभाव और हिंसा से मुक्त होकर सद्भाव से रहें। गांधी का मानना था कि रामराज्य अहिंसक प्रतिरोध (सत्याग्रह) और आत्मनिर्भरता (स्वराज) के सिद्धांतों के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। उनके रामराज्य के सपने में निम्नलिखित प्रमुख तत्व शामिल हैः

सत्यः गांधीजी के दर्शन का आधार सत्य था। वह हर समय सच बोलने में विश्वास करते थे, भले ही इसके लिए उन्हें व्यक्तिगत बलिदान देना पड़े इसलिए उनकी "रामराज्य" की अवधारणा पूर्णत्या सत्य के सिद्धांत पर आधारित है।

अहिंसाः गांधीजी अहिंसा के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि सच्ची ताकत अन्याय और उत्पीड़न का शांतिपूर्वक विरोध करने में है। अतः उनके "रामराज्य" में अहिंसा का कोई स्थान नही है।

सादा जीवन और उच्च विचारः गांधीजी ने सादगी और आत्मनिर्भरता की जीवन शैली को बढ़ावा दिया। उन्होंने न्यूनतम भौतिक संपत्ति के महत्व पर जोर दिया और लोगों को आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने की वकालत की। उनके "रामराज्य" का मूलमंत्र सादा जीवन और उच्च विचार ही है।

समानता और सामाजिक न्यायः गांधी ने जाति–आधारित भेदभाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी और एक ऐसा समाज बनाने की दिशा में काम किया जहां सभी व्यक्तियों के साथ समानता और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाये। अतः समानता और सामाजिक न्याय भी उनके रामराज्य की परिकल्पना के केन्द्रबिंदु में है।

स्वदेशी और आत्मनिर्भरताः गांधीजी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान विदेशी वस्तुओं पर भारत

की निर्भरता को कम करने के लिए स्थानीय संसाधनों और उत्पादन के उपयोग को प्रोत्साहित किया। गांधीजी के रामराज्य के प्रमुख तत्वो में स्वदेशी और आत्मनिर्भरता भी प्रमुख रूप से शामिल है।

गौरतलब है कि गांधीजी की रामराज्य की संकल्पना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें नैतिक और आध्यात्मिक आयाम भी शामिल है। उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता तभी प्राप्त की जा सकती है जब लोग इन सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवन में अपनाएंगे। महात्मा गांधी ने 27 जून, 1929 को 'यंग इंडिया' जर्नल में प्रकाशित "रामराज्य" नामक एक लेख में रामराज्य का उल्लेख किया था। इस लेख में, गांधी ने रामराज्य के अपने दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से बताया, जो एक आदर्श समाज और शासन पर आधारित उनके विचारों को दर्शाता है। सत्य, अहिंसा और न्याय के उनके सिद्धांतो के साथ–साथ इस लेख में, गांधी ने रामराज्य को एक ऐसी स्थिति के रूप में वर्णित किया जिसमें शासक और शासित समान रूप से आत्म–संयम, आत्म–अनुशासन और निस्वार्थता होकर धर्म (कर्तव्य) का पालन करते हैं। गांधीजी के रामराज्य में लोगों की, विशेषकर गरीबों और वंचितों की भलाई पर जोर दिया गया है। भौतिक गतिविधियों के बजाय आध्यात्मिक और नैतिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। शोषण एवं उत्पीड़न का उनके रामराज्य की संकल्पना में कोई स्थान नही है। गांधीजी के रामराज्य की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भरता और स्वदेशी सिद्धांतों पर आधारित है।

गांधीजी ने रामराज्य को एक शाब्दिक राज्य के रूप में नहीं, बल्कि एक आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने वाली एक रूपक अवधारणा के रूप में देखा है। जहाँ पर सत्य, अहिंसा और समानता के सिद्धांत इस दृष्टि के केंद्र में थे, और उनका मानना था कि अहिंसक प्रतिरोध और रचनात्मक कार्य के अभ्यास के माध्यम से रामराज्य प्राप्त करना संभव है। यहाँ यह कहना भी उल्लेखनीय होगा कि गांधी की रामराज्य की दृष्टि समय के साथ विकसित हुई थी जो भारतीय इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिकता की उनकी समझ से प्रभावित थी। यदि गांधी के विभिन्न लेखों और भाषणों में उनके रामराज्य के चित्रण में सूक्ष्म भिन्नताएं भी देखी गई हैं, लेकिन अवधारणा का सार सत्य और अहिंसा के उनके आदर्शों पर निश्चित तौर पर ही आधारित है।

गांधी का रामराज्य यानी जादूगर का पिटारा

गांधीजी की रामराज्य की अवधारणा कोई भ्रम का बक्सा नहीं है बल्कि, यह सत्य, अहिंसा, समानता और स्वशासन के सिद्धांतों पर आधारित एक आदर्श समाज की परिकल्पना है। हालाँकि, यह समझना आवश्यक है कि गांधी के रामराज्य का उद्देश्य किसी ऐतिहासिक युग का शाब्दिक पुनरुद्धार नहीं है, बल्कि समकालीन समय में प्रयास करने के लिए एक रूपक आदर्श है जिसके प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं:

अहिंसा, सच्चाई और ईमानदारी, आत्मनिर्भरता और स्वराज, सामाजिक समानता, सामाजिक भेदभाव और अस्पृश्यता का उन्मूलन, सत्ता का विकेंद्रीकरण इत्यादि।

गांधीजी के रामराज्य के दृष्टिकोण की नैतिकता एवं नैतिक सिद्धांतों पर जोर देने की व्यवहारिकता की विभिन्न विद्वानो द्वारा प्रशंसा की जाती रही है, जबकि इसकी संभावित अव्यवहारिकता और एक विशिष्ट धार्मिक संदर्भ के साथ इसके जुड़ाव के लिए इसकी आलोचना भी की जाती है। कुछ लोगों का तर्क है कि विविध और आधुनिक समाज में रामराज्य के अनुप्रयोग को चुनौतियों और जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है। अंततः, कोई गांधी की रामराज्य की अवधारणा को एक प्रेरक आदर्श या फिर अप्राप्य सपने के रूप में देखता है जोकि व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्याख्याओं पर निर्भर हो सकता है, फिर भी, यह गांधी की विरासत और न्यायपूर्ण एवं सामंजस्यपूर्ण समाज के उनके दृष्टिकोण का एक अनिवार्य हिस्सा तो निश्चित तौर पर है। जहाँ तक गांधी के रामराज्य और जादूगर का बक्सा कथन का प्रश्न है ये दोनो अलग–अलग अवधारणाएं हैं जिनको, एक दुसरे का पर्याय कहना कदापि उचित नही होगा, चूकिं गांधीजी के रामराज्य की अवधारणा का अपना विशेष महत्व एवं सारगर्भित अर्थ है।

गांधी के रामराज्य को अंबेडकर की चुनौती

गांधीजी के रामराज्य की अवधारणा की डॉ. बी. आर. अंबेडकर की ओर से कुछ आलोचनाएँ हुईं। बाबा साहेब

भीमराव अंबेडकर, एक प्रमुख समाज सुधारक, न्यायविद् और भारत के संविधान के निर्माता थे। वे हाशिये पर खड़े और उत्पीड़ित समुदायों के अधिकारों के समर्थक थे। उनकी निम्नलिखित कारणों से गांधी के रामराज्य के दृष्टिकोण पर कुछ आपत्तियां थीं:–

जाति व्यवस्था: अंबेडकर ने रामराज्य के अपने दृष्टिकोण में जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता के मुद्दे का समाधान करने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं करने के लिए गांधीजी के रामराज्य की अवधारणा की आलोचना की। अंबेडकर जाति व्यवस्था को एक प्रमुख सामाजिक बुराई के रूप में देखते थे और उनका मानना था कि इसे सक्रिय रूप से चुनौती देने और खत्म करने में गांधी की विफलता एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

दलित अधिकार: दलितों (जिन्हें पहले अछूत कहा जाता था) के अधिकारों और उत्थान के लिए गांधी के दृष्टिकोण को अंबेडकर ने पितृसत्तात्मक और अपर्याप्त माना था। अंबेडकर ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सार्वजनिक सेवाओं में दलितों के लिए अधिक क्रांतिकारी सुधारों और आरक्षण के लिए तर्क दिया।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व: अंबेडकर गांधी के सर्वव्यापी ग्राम–आधारित राजनीतिक व्यवस्था के विचार से असहमत थे, क्योंकि उनका मानना था कि यह उच्च जातियों के प्रभुत्व को ही कायम रखेगा और सभी सामाजिक समूहों के हितों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं करेगा।

अहिंसा: जबकि गांधीजी की अहिंसा की वकालत उनके दर्शन के केंद्र में थी, अंबेडकर ने सवाल किया कि क्या इसे हाशिए पर मौजूद समुदायों के अधिकारों के संघर्ष में प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है, क्योंकि सत्ता की जड़ें मजबूत हैं और उन्हें हिंसा का सामना करना पड़ता है।

भूमि सुधार: अंबेडकर ने भूमि सुधारों पर भी गांधी के रुख की यह तर्क देते हुए आलोचना की, कि यह लाखों किसानों की भूमिहीनता और गरीबी को पूरी तरह से सम्प्रेषित नहीं कर सकता।

इन आलोचनाओं के बावजूद भी गांधी और अंबेडकर दोनों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया। गौरतलब है कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण और बहसें जटिल हो सकती हैं और विभिन्न विद्वानों और विचारकों की निसंदेह इन मामलों पर अलग–अलग राय भी हो सकती है।

क्या राम राज्य वर्ण व्यवस्था पर आधारित है?

रामराज्य एक ऐसा शब्द है जो न्याय, समानता और अपने सभी नागरिकों के कल्याण के सिद्धांतों पर आधारित एक आदर्श समाज को संदर्भित करता है। डॉ. अंबेडकर ने रामराज्य पर अपने विचार व्यक्त किए, जिसमें उन्होंने सामाजिक न्याय के महत्व और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों के सशक्तिकरण पर जोर देते हुए रामराज्य की अवधारणा को अधिक समतावादी दृष्टिकोण से पुनव्याख्यायित किया। डॉ. अंबेडकर ने हिंदू धर्मग्रंथों और पौराणिक कथाओं के कुछ तत्वों की फिर से जांच की, लेकिन एक न्यायपूर्ण समाज के लिए उनका दृष्टिकोण जातिवाद को बढ़ावा देने से बहुत दूर था। इसके बजाय, उन्होंने जाति–आधारित भेदभाव को खत्म करने और एक ऐसे समाज की स्थापना करने की मांग की, जहां हर व्यक्ति, उनकी जाति की परवाह किए बिना, समान अधिकारों और अवसरों का आनंद उठा सके।

अंबेडकर के विचारों और योगदानों ने आधुनिक भारत के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और उनके अथक प्रयास लोगों को अधिक न्यायसंगत समाज की खोज में प्रेरित करते रहे हैं। हालाँकि, उनके विचारों को सटीक रूप से समझने के लिए और किसी भी प्रकार के जातिवाद का सुझाव देने के लिए उनकी गलत व्याख्या न करने के लिए उनके कार्यों और भाषणों का गहराई से अध्ययन करना आवश्यक है।

गांधी, राम और आरएसएस

रामराज्य के संदर्भ में, जिसका अनुवाद भगवान राम के शासनकाल के रूप में किया जा सकता है, गांधी, राम और आरएसएस शब्दों के अलग–अलग संबंध हैं:

गांधी: महात्मा गांधी को संदर्भित करता है, जो ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक प्रमुख नेता थे। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक प्रमुख व्यक्ति थे और अपने अहिंसा के दर्शन और विरोध के साधन

के रूप में सविनय अवज्ञा के उपयोग के लिए जाने जाते हैं। गांधीजी की रामराज्य की कल्पना सत्य, धर्म और नैतिक शासन के सिद्धांतों पर आधारित थी। उन्होंने रामराज्य के विचार को एक आदर्श समाज के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जहां शासक निस्वार्थ भाव से कार्य करता है और करुणा और निष्पक्षता के साथ लोगों की सेवा करता है। गांधीजी के लिए, रामराज्य एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज का प्रतीक था।

रामः भगवान राम को संदर्भित करता है, जो हिंदू धर्म में एक पूजनीय देवता और हिंदू महाकाव्य, रामायण में केंद्रीय बिन्दु हैं। भगवान राम को सदाचार, धर्म और आदर्श नेतृत्व का प्रतीक माना जाता है। एक राजा के रूप में उनके शासनकाल को अक्सर रामराज्य, शांति, समृद्धि और सुशासन के काल के रूप में चित्रित किया जाता है। रामराज्य की अवधारणा न केवल एक धार्मिक धारणा है, बल्कि भारत के इतिहास में विभिन्न नेताओं द्वारा एक आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने के लिए रूपक के रूप में भी इसका उपयोग किया गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः भारत में एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन है। इसकी स्थापना 1925 में हिंदुओं के बीच सांस्कृतिक और सामाजिक एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। आरएसएस की विचारधारा हिंदू संस्कृति, मूल्यों और राष्ट्रवाद पर जोर देती है। वर्षों से, इसका भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है और यह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से जुड़ा हुआ है, जो वर्तमान में भारत में सत्तारूढ़ दल है। रामराज्य पर आरएसएस का दृष्टिकोण हिंदू संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं को बनाए रखने और बढ़ावा देने के इर्द–गिर्द घूमता है। यह अपनी हिंदू विरासत में निहित एक मजबूत और एकीकृत भारत की कल्पना करता है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि रामराज्य की व्याख्या और इन हस्तियों या संगठनों से इसका संबंध अलग–अलग व्यक्तियों और समूहों के बीच भिन्न हो सकता है। जबकि महात्मा गांधी का रामराज्य का दृष्टिकोण नैतिक शासन और लोगों की सेवा पर केंद्रित था, आरएसएस सहित अन्य व्यक्तियों या समूहों की व्याख्याओं में उनके अपने वैचारिक झुकाव और दृष्टिकोण के आधार पर एक अलग जोर हो सकता है।

रामराज्य का भारतीय समाज

रामराज्य हिंदू पौराणिक कथाओं और भारतीय दर्शन से लिया गया एक शब्द है। यह धार्मिकता, न्याय और नैतिक शासन के सिद्धांतों पर आधारित समाज की एक आदर्श और सामंजस्यपूर्ण स्थिति को संदर्भित करता है। रामराज्य की अवधारणा हमारे श्रद्धेय भगवान श्रीराम से जुड़ी हुई है जोकि हिंदू धर्म के और प्राचीन भारतीय महाकाव्य, रामायण के नायक है। रामायण में, भगवान राम को एक आदर्श शासक के रूप में दर्शाया गया है जो धर्म का प्रतीक है और एक न्यायपूर्ण और परोपकारी शासन का नेतृत्व करता है। उनके शासन को अक्सर आदर्श समाज का प्रतीक माना जाता है जहां लोगों का कल्याण, उनकी खुशी और समृद्धि सर्वोपरि है। वर्तमान भारत में विभिन्न नेताओं और राजनीतिक हस्तियों द्वारा एक आदर्श समाज और शासन के अपने दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए रामराज्य के विचार का आह्वान किया जाता रहा है। चूंकि रामराज्य भ्रष्टाचार, असमानता और अन्याय से मुक्त और नैतिकता और नैतिक सिद्धांतों द्वारा शासित समाज का प्रतीक है।

भारतीय समाज में, रामराज्य का प्रभाव न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में, बल्कि राजनीतिक वक्तव्यो और सार्वजनिक प्रवचनो में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहॉ तक कि रामराज्य की अवधारणा में पाए जाने वाले न्याय, नैतिकता और नैतिक आचरण के सिद्धांत भारतीय समाज के नैतिक ढांचे को आकार देने में महत्वपूर्ण मार्गदर्शक कारक बने हुए हैं। हालाँकि, यह पहचानना आवश्यक है कि रामराज्य की व्याख्या विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के बीच भिन्न–भिन्न हो सकती है। किसी भी ऐतिहासिक, धार्मिक या दार्शनिक अवधारणा की तरह, रामराज्य के अनुप्रयोग पर भी अलग–अलग लोगों के अलग–अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं जोकि अक्सर बहस और चर्चा का विषय बने रहते है। यह कुछ लोगों के लिए प्रेरणा और आकांक्षा का विषय बना हुआ है, जबकि अन्य लोग इसके ऐतिहासिक संदर्भ और आज के जटिल और विविध समाज में व्यावहारिक प्रयोज्यता को देखते हुए इसे अत्याधिक आलोचनात्मक नजरिए से देखते हैं। कुछ आलोचकों का तर्क है कि आधुनिक भारतीय समाज में समाज और शासन की जटिलताओं को देखते हुए, इस अवधारणा में कुछ परिर्वतन करके इसे आदर्श बनाया जा सकता है क्योकि व्यावहारिक रूप से इसे पूर्णत्या लागू नहीं किया जा सकता।

रामराज्य और भारतीय संविधान की मूल संरचना

हालांकि यह बहस का विषय हो सकता है कि हमारे संविधान के धार्मिक दृष्टिकोण का मूल संविधान में उपयोग किए गए दृष्टांतों से गहरा संबंध है या नही। संविधान के भाग–3 जिसमें मौलिक अधिकार अध्याय शामिल है, में श्री राम, श्री लक्ष्मण और माता सीता के चित्रण हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि भारतीय संविधान को संविधान निर्माताओं, संविधान सभा ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया था फिर इन चित्रों का उपयोग करने के पीछे का विचार भारत की प्राचीन विरासत, संस्कृति, रीति–रिवाज, जीवन और आधुनिक काल तक भारत की भावना को चित्रित करना था या कुछ ओर। डॉ0 अंबेडकर जैसे महान व्यक्तित्व ने व्यक्तिगत रूप से डॉ0 राजेंद्र प्रसाद को सचित्र संविधान भेंट किया था तथा संविधान सभा के एक भी सदस्य का उल्लेख नहीं है जिसने इस विचार का विरोध किया हो।

भारत का संविधान कला का एक आकर्षक नमूना है जिसका पहला भाग सिंधु घाटी के लोकप्रिय सील–चिह्न, बैल से शुरू होता है। नागरिकता का भाग भारत के वैदिक युग द्वारा दर्शाया गया है। यह वह समय था जब लोकप्रिय महाकाव्य रामायण और महाभारत का उदय हुआ। राज्य नीति के अध्याय की शुरुआत कुरुक्षेत्र युद्ध से पहले अर्जुन और कृष्ण के वार्तालाप एवं गीता के उपदेष के प्रतिष्ठित दृश्य से होती है। गुप्त काल को भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। शानदार बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास का संयोजन महान कला और साहित्य की विशेषता थी। अजंता की पेंटिंग, कालिदास के ग्रंथ, आर्यभट्ट की गणितीय प्रतिभा, ये सभी गुप्त काल का हिस्सा थे।

इस संदर्भ में तर्क ये भी दिये जाते है कि मूल संविधान पर चित्र केवल रोशनी या सजावट के उद्देश्य से थे परन्तु वस्तुस्थिति का गहन अध्ययन करने पर यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता। ये दुर्लभ चित्र केवल एक अलंकरण नहीं हैं, बल्कि भारतवर्श के जनमानस में रची–बसी उनकी अन्तरआत्मा की पुकार है जिसके साथ वे जीते और मरते है। भले ही ये चित्र वास्तव में सविधान के किसी भी लिखित अनुच्छेद का हिस्सा नहीं है और ना ही रामराज्य, हमारे संविधान की मूल संरचना का एक हिस्सा है तो भी इस संबंध में आम नागरिकों के मन में शेष किसी भी संदेह को दूर करना शासन का महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि रामराज्य शब्द भगवान राम के शासनकाल से जुड़ा हुआ है, जिसे धार्मिक और न्यायपूर्ण शासन का प्रतीक माना जाता है। रामराज्य में, शासक की कल्पना एक निस्वार्थ, बुद्धिमान और दयालु राजा के रूप में की जाती है जो सभी नागरिकों के कल्याण के लिए काम करता है। हालाँकि, रामराज्य की व्याख्या विभिन्न व्यक्तियो एवं समुदायो ने अपनी सुविधानुसार की है तो भी चाहे अनचाहे सभी इस बात पर तो एकमत है कि रामराज्य की स्थापना निश्चित रूप से आलोकिक एवं अद्भुत है। तभी तो हमारे संविधान निर्माताओ ने इन धार्मिक प्रसंगो को देश के मूल संविधान में दृष्टांतों के माध्यम से अंगीकार किया। पिछले कुछ समय से भारत के सर्वोच्च न्यायालय के माध्यम से भी देश में रामराज्य की स्थापना हेतु याचिकाए दाखिल की जाती रही है। अतः अन्त में इस लेख के सार के रूप में यदि यह कहा जाए कि वह शासन प्रणाली जो सभी नागरिको के हित में हो, को अपनाने में कोई संकोच नही करना चाहिए फिर चाहे वह रामराज्य कि स्थापना ही क्यो ना हो तो उसे स्थापित करने के लिए हर एक रचनात्मक कदम वंदनीय है, कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता अतुल, *'जागरण'*।
2. सत्याग्रह, 29.08.2022।
3. गांधी महात्मा, *'हिंदी स्वराज'*।
4. एनबीटी हिंदी 12.04.2011।

****